जब परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हमारी परीक्षा लेती हैं

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की सदा स्तुति हो! आज प्रभु ने अनुग्रह करके हमें जीवन का एक और दिन दिया है, और मैं आपको आमंत्रित करता हूँ कि जब हमारी उद्धार का दिन निकट आ रहा है, तब आप उसके वचन पर गहराई से मनन करें।

जब परमेश्वर हमें कोई प्रतिज्ञा देता है, तो वह अक्सर परीक्षा के समय के साथ आती है। उसकी प्रतिज्ञाएँ हमेशा तुरंत पूरी नहीं होतीं, क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि प्रतीक्षा के दौरान हमारा विश्वास और चरित्र बढ़े। पवित्रशास्त्र हमें दिखाता है कि परमेश्वर परीक्षाओं को दंड देने के लिए नहीं, बल्कि अपनी प्रतिज्ञाओं की पूर्ति के लिए हमें तैयार करने और अपनी प्रभुता प्रकट करने के लिए होने देता है।

याकूब 1:2–4 (ESV)
“हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो
तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, क्योंकि यह जानो कि
तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। और धीरज को अपना पूरा काम करने दो, ताकि तुम सिद्ध और सम्पूर्ण बनो और तुम्हें किसी बात की घटी न रहे।”

जब परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हमारी परीक्षा लेती हैं

यूसुफ के जीवन पर विचार करें। जब परमेश्वर ने उसे यह दर्शन दिया कि उसके पिता, माता और भाई उसके सामने झुकेंगे (उत्पत्ति 37:5–10), तो स्वाभाविक रूप से उसने सोचा होगा कि यह जल्दी ही होगा। लेकिन जीवन उसकी अपेक्षा से भिन्न दिशा में आगे बढ़ा। पहले उसके भाइयों ने उसे दासत्व में बेच दिया। फिर पोटीपर की पत्नी ने उस पर झूठा आरोप लगाया और उसे राजा के कारागार में डाल दिया (उत्पत्ति 39)।

ये परीक्षाएँ शैतान की ओर से नहीं थीं, बल्कि परमेश्वर की सर्वोच्च परीक्षा थीं। वे परमेश्वर की उस योजना का हिस्सा थीं जिसके द्वारा वह उसे न केवल मिस्र बल्कि उसके अपने परिवार को भी अकाल से बचाने के लिए तैयार कर रहा था (उत्पत्ति 45:7–8)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हमेशा ऐसी प्रक्रियाओं के साथ आती हैं जो हमारे चरित्र को शुद्ध करती हैं और हमें भरोसा करना सिखाती हैं।

भजन संहिता 105:17–19 (ESV)
“उसने उनसे पहले एक मनुष्य को भेजा—यूसुफ, जो दास करके बेच दिया गया था। उन्होंने उसके पांव बेड़ियों से दुखाए; वह
लोहे की जंजीरों में जकड़ा गया। जब तक उसका कहा हुआ पूरा न हुआ, तब तक यहोवा का वचन उसकी परीक्षा लेता रहा।”

जब परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हमारी परीक्षा लेती हैं

यूसुफ की कहानी एक ऐसे सिद्धांत को दर्शाती है जो मसीही धर्मशास्त्र के केंद्र में है: परमेश्वर की व्यवस्था (Providence) और परीक्षा साथ-साथ काम करती हैं। प्रतिज्ञाएँ उसके समय के अनुसार पूरी होती हैं, हमारे समय के अनुसार नहीं। उसकी परीक्षा उसके प्रेम की अभिव्यक्ति है, जो हमें वह प्राप्त करने के लिए तैयार करती है जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है।

इसी प्रकार, अब्राहम का जीवन विश्वास की परीक्षा को दर्शाता है। परमेश्वर ने उससे वादा किया कि वह बहुत-सी जातियों का पिता होगा और उसकी संतान आकाश के तारों के समान असंख्य होगी (उत्पत्ति 15:5)। लेकिन यह प्रतिज्ञा तुरंत पूरी नहीं हुई। कई वर्ष बीत गए और वह वृद्धावस्था तक निःसंतान रहा। फिर परमेश्वर ने उससे इसहाक को बलि चढ़ाने के लिए कहा (उत्पत्ति 22:1–3)।

यह परीक्षा परमेश्वर की प्रतिज्ञा का विरोध नहीं थी, बल्कि अब्राहम के विश्वास की पुष्टि थी।

इब्रानियों 11:17–19 (ESV)
“विश्वास ही से अब्राहम ने, जब उसकी परीक्षा हुई, इसहाक को चढ़ाया; और जिसने प्रतिज्ञाएँ पाई थीं, वह अपने एकलौते पुत्र को चढ़ाने पर तैयार था। उसके विषय में कहा गया था, ‘इसहाक से ही तेरा वंश कहलाएगा।’ क्योंकि उसने समझा कि परमेश्वर मरे हुओं में से भी जिलाने में समर्थ है।”

जब परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हमारी परीक्षा लेती हैं

अब्राहम ने आज्ञा मानी और पूरी तरह भरोसा रखा कि परमेश्वर अपनी वाचा को पूरा करेगा। यह कार्य मसीह के सर्वोच्च बलिदान की ओर संकेत करता है (रोमियों 8:32) और दिखाता है कि परमेश्वर की योजना में अक्सर ऐसी परीक्षाएँ शामिल होती हैं जो विश्वासियों को महान महिमा के लिए तैयार करती हैं।

धर्मशास्त्रीय चिंतन

ढांचा स्पष्ट है: परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ सच्ची हैं, परंतु वे विश्वासयोग्य धैर्य की मांग करती हैं। परीक्षाएँ असफलता का प्रमाण नहीं हैं; वे भरोसे, धैर्य और पवित्रता में बढ़ने के अवसर हैं। नया नियम इसे “धीरज” या “स्थिरता” कहता है (रोमियों 5:3–5)। जैसे यूसुफ, अब्राहम और अय्यूब ने परीक्षाओं का सामना किया, वैसे ही आज के विश्वासियों का विश्वास भी कठिनाइयों द्वारा शुद्ध किया जाता है।

कलीसिया के रूप में हमें अब्राहम या यूसुफ से भी बड़ी प्रतिज्ञाएँ मिली हैं। हम स्वर्ग के राज्य के वारिस हैं, मसीह के साथ राज्य करने के लिए बुलाए गए हैं (रोमियों 8:16–17), उसके आत्मिक भवन में स्तंभ बनने के लिए (प्रकाशितवाक्य 3:12), और नए यरूशलेम में अनन्त महिमा के अधिकारी बनने के लिए (प्रकाशितवाक्य 21:1–4)।

जब परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हमारी परीक्षा लेती हैं

फिर भी परमेश्वर यह देखने के लिए परीक्षाएँ होने देता है कि क्या हम वास्तव में उसके राज्य की इच्छा रखते हैं। हमारी परीक्षाएँ उसकी प्रतिज्ञाओं में बाधा नहीं हैं; वे दिव्य तैयारी के साधन हैं। इसलिए जब विरोध आए, तो परमेश्वर के वचन पर संदेह न करें। अपनी दृष्टि उसकी प्रतिज्ञाओं पर स्थिर रखें, जैसे अब्राहम और यूसुफ ने किया। भले ही अभी कोई चिन्ह दिखाई न दे, अनन्त जीवन की आशा और आने वाली महिमा को थामे रखें।

यशायाह 40:29–31 (ESV)
“वह थके हुए को शक्ति देता है और निर्बल को बहुत सामर्थ देता है। जवान थक जाते हैं और श्रमित होते हैं, और युवा पूरी तरह गिर पड़ते हैं; परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं वे नया बल प्राप्त करते हैं; वे उकाबों की नाईं पंख फैलाकर उड़ेंगे; वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे; वे चलेंगे और थकित न होंगे।”

धर्मशास्त्रीय अंतर्दृष्टि

यह पद धैर्य के लिए दिव्य सामर्थ पर जोर देता है। परमेश्वर कमजोरों को मजबूत करता है और उन लोगों को संभालता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। परीक्षाएँ त्यागे जाने का संकेत नहीं हैं—वे ऐसे अवसर हैं जहाँ हमारी कमजोरी में उसकी शक्ति सिद्ध होती है।

जब परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हमारी परीक्षा लेती हैं

2 कुरिन्थियों 12:9 (ESV)
“मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।”

अंततः, यूसुफ, अब्राहम और अय्यूब की कहानियाँ हमें सिखाती हैं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ विश्वासयोग्य हैं, चाहे परिस्थितियाँ असंभव क्यों न लगें। परीक्षाएँ परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करती हैं, हमारे चरित्र को शुद्ध करती हैं और हमें महिमा के लिए तैयार करती हैं। जैसे मसीह ने हमारे उद्धार के लिए क्रूस सहा (इब्रानियों 12:2), वैसे ही हमें भी धैर्य और विश्वास के साथ सहन करने के लिए बुलाया गया है, यह जानते हुए कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति निश्चित है।

मरानाथा!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp